डा.पी.एस.पाटील,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि, कु.शामला वसंत कोळेकर का "धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन" लघु-शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।

तिथि : 19 MAR 1998

अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डा.कृष्णकांत पाटील
शिवराज महाविद्यालय,गडहिंग्लज,
जि.कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, कु.शामला वसंत कोळेकर ने मेरे निर्देशन में "धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन" लघुशोध-प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। यह पुर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है और इसमें शोधछात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोधनिर्देशक

(प्रा.डा.कृष्णकांत पाटील)

गडहिंग्लज।

तिथि - 19 MAR 1998

प्रख्यापन

"धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन" लघुशोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, एम्.फिल (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोधछात्रा

(कु.शामला वसंत कोळेकर)

कोल्हापुर :

तिथि - 19 MAR 1998

* प्राक्कथन *

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य के इतिहास में उपन्यास विधा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों में काल्पनिकता ज्यादा थी। परंतु आधुनिक काल में उपन्यास विधा में वास्तविक तथा यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज का तथा समाज की अनेक समस्याओं का यथार्थ रूप में चित्रण इसमें किया गया है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों ने सामाजिक उपन्यास ज्यादहतर लिखें, क्योंकि जब पाठक उपन्यास पढ़ता है, तो उसमें अपने जीवन की अनुभूति देखता है, उसे वह अपनी अनुभूति नजर आती है। ऐसे रचनाधर्मी साहित्यकारों में धर्मवीर भारती का नाम लिया जाता है। धर्मवीर भारती एक श्रेष्ठ साहित्यकार उपन्यासकार, कवि, सम्पादक तथा समीक्षक हैं, जिन्होंने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। धर्मवीर भारती के अन्य विषयों के साथ-साथ उपन्यास विधा में भी भारती को काफी ख्याति प्राप्त हो चुकी है। यह लघु-शोध प्रबंध भारती के उपन्यास विधा में चित्रित नारी-जीवन पर आधारित है।

अपने विश्वविद्यालयीन जीवन में मैंने भारती जी का "गुनाहों का देवता" उपन्यास पढ़ा। यह उपन्यास पढ़ने पर उसकी सुधा के चरित्र ने मुझे आकृष्ट किया। तब मेरे मन में विचार आया कि "गुनाहों का देवता" की नायिका सुधा तथा बाकी नारियों का यही हाल है, तो "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास की नारी पात्रों की क्या स्थिति होगी? यह जानने के लिए मैंने धर्मवीर भारती के उपन्यासों पर शोधकार्य करने का निश्चय किया। यदयपि "ग्यारह सपनों का देश" उपन्यास के निर्माण में अन्य लेखकों के साथ धर्मवीर भारती ने भी महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है, तथापि वह स्वतंत्र रूप में केवल भारती की रचना न होने के कारण, प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उसकी विवेचना नहीं की गयी है। इसके बारे में मैंने मेरे शोधनिर्देशक डा.कृष्णकांत पाटील जी से अनुमति ली, तब उन्होंने भी सहर्ष स्वीकृति दी।

शोधकार्य शुरू करने से पहले मेरे मन में यह सवाल खड़ा हो गया कि क्या अब तक अन्य किसी विद्धानों ने इस पर शोध कार्य किया है? इसकी खोज करने पर मुझे मालूम हुआ कि शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में धर्मवीर भारती जी की सभी कृतियों

पर आधारित डा.पुष्पा वास्कर जी का पीएच.डी.शोध-प्रबंध "धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" प्रस्तुत हो चुका है और धर्मवीर भारती के एक ही औपन्यासिक कृति पर श्री भारत कुचेकर जी का "धर्मवीर भारती के "गुनाहों का देवता" उपन्यास का तात्त्विक विवेचन" यह लघु-शोध-प्रबंध लिखा गया है।

जितने भी शोधकर्ताओं ने भारती के साहित्यपर शोध कार्य किया है, उनमें भारती जी के उपन्यासों में अंकित नारी पात्रों पर विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं हो पायी है। अतः मैंने इस उपेक्षित अंग पर ही शोधकार्य करना हितकर समझा। इसलिए मैंने "धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन" विषय पर अपना लघु-शोध-प्रबंध लिखना शुरू किया तब मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न खड़े हो गये।

१. धर्मवीर भारती जी के कृतित्त्व पर उनके व्यक्तित्त्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है?
२. धर्मवीर भारती के उपन्यासों पर उस युग की परिस्थितियों का कहाँ तक प्रभाव पड़ा है?
३. धर्मवीर भारती के उपन्यासों का कथ्य क्या है?
४. धर्मवीर भारती ने उपन्यासों की नारियों के जीवन में आनेवाली समस्याओं को कहाँ तक उजागर किया है?
५. धर्मवीर भारती अपने उपन्यासों में नारी का जीवन चित्रित करने में कहाँ तक सफल हुए है?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास मैंने इस लघु-शोध-प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार लिखा है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघुशोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

१. <u>प्रथम अध्याय</u> - "धर्मवीर भारती का जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय।"

इस अध्याय में मैंने उनके जीवन परिचय के साथ-साथ उनके साहित्य का परिचय दिया है। जिसमें उन्होंने अनेक विधाओं में लिखी रचनाओं को प्रस्तुत किया है।

इसके साथ ही मैंने उनके व्यक्तित्व का भी परिचय दिया है और कुछ प्राप्त सम्मानों की जानकारी देने का प्रयास किया है। उनके बहुमुखी साहित्य का परिचय दिया है। साथ ही उनके साहित्य का उनके जीवन से किस प्रकार का संबंध है इसका भी चित्रण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया है।

२. द्वितीय अध्याय : "धर्मवीर भारती के औपन्यासिक युग की पृष्ठभूमि। "

इस अध्याय में मैंने भारती के उपन्यासों के युग की परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है। जिसमें मैंने उस काल की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है। साथ ही उस युग की स्थिति का भारती के उपन्यासों पर क्या प्रभाव पड़ा है इसे भी स्पष्ट किया है। अंत में निष्कर्ष लिखा है।

३. तृतीय अध्याय : "धर्मवीर भारती के उपन्यासों का कथ्य। "

इस अध्याय में प्रथमतः मैंने कथ्य का अर्थ और महत्त्व लिखा है। बाद में विवेच्य उपन्यासों का कथ्य लिखा है। भारती के दोनों उपन्यासों का कथ्य है - "नर-नारी के प्रेमसंबंधों को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना। इसका स्पष्टीकरण दिया है। अंत में निष्कर्ष लिखा है।

४. चतुर्थ अध्याय : "धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन संबंधी समस्याएँ। "

इस अध्याय में मैंने इन उपन्यासों में आयी हुई नारियों के जीवन से संबंधित सभी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। जिसमें प्रेम समस्या, अनैतिक यौन समस्या, विवाह समस्या, जाति-बिरादरी की समस्या, पारिवारिक विघटन तथा अंधश्रद्धा की समस्या आदि समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अंत में निष्कर्ष लिखा है।

५. पंचम अध्याय : "धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन। "

इस अध्याय में मैंने धर्मवीर भारती के उपन्यासों की नारियों के जीवन का चित्रण किया है। भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन के बारे में मुझे जो महसूस हुआ उसे इस अध्याय में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इन उपन्यासों के प्रधान

और प्रभावशाली नारी पात्र और उनका व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन, उनकी पीड़ाएँ, यातनाएँ उनकी स्वतंत्रता आदि का विश्लेषण किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

उपसंहार :

सभी अध्यायों के अंत में मैंने उपसंहार के रूप में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है। जो प्रबंध के सभी अध्यायों के अध्ययन का सार है। उपसंहार में ही लेखकद्वारा अंकित नारी-जीवन के चित्रण की सीमाओं का उल्लेख किया है। अंत में मैंने संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

१. प्रस्तुत प्रबंध की विवेचित सामग्री प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।
२. अध्ययन के आधार पर ही लेखक के व्यक्तित्व एवं साहित्यकारों की परस्पर तुलना कर साहित्य में प्रतिबिंबित व्यक्तित्त्व को उभारने की कोशिश की है।
३. भारती के दोनों उपन्यासों में अंकित नारी पात्रों का चरित्रचित्रण कर उनके माध्यम से नारी जीवन को खोजने की कोशिश की है।
४. उपन्यास में अंकित नारी पात्रों को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने का प्रयास किया है।
५. नारी जीवन के अंगों के सैद्धांतिक अध्ययन के साथ साथ दोनों उपन्यासों के अंकित नारी जीवन के व्यवहारीक पक्ष को भी सुक्ष्मता के साथ स्पष्ट किया है और स्वतंत्र रूप में समसामायिक नारी जीवन को रेखांकित किया है।

ऋणनिर्देश

इस लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में मुझे प्रोत्साहित करनेवाले तथा सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.कृष्णकांत पाटील जी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी आप ने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया। आप के मार्गदर्शन के बिना यह कार्य असंभव था इसलिए मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटील जी, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डा.वसंत मोरे जी, आदरणीय डॉ.अर्जुन चव्हाण जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा है।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी वसंतराव कोळेकर और माताजी मिनाक्षी कोळेकर, भैया योगेश और मामा-मामी जिनके आशीर्वाद से मैंने यह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

मेरे मित्र परिवारों में श्री.भारत कुचेकर, नीता, संगिता, दिव्या, सुजाता, विजया, चित्रा आदि ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञभाव रखती हूँ।

शिवराज कॉलेज, गडहिंग्लज तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के पदाधिकारी तथा ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए उनको मैं अपना हार्दिक धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

साथ ही मैं टंकलेखक श्री मिलिंद भोसले(कोल्हापुर) जी की भी आभारी हूँ।

अंत में इस कृति में होनेवाली त्रुटियों को स्वीकार करते हुए यह लघुशोध-प्रबंध आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

शोधछात्रा

कोल्हापुर
दिनांक :

(कु.शामला वसंत कोळेकर)